आनंद उत्सव के दौरान इंदौर जिले के जिला संपर्क व्यक्ति श्री विजय मेवाड़ा के प्रयासो की कहानी, उन्हीं की ज़ुबानी

चुनौतियों, संघर्षों से चलकर आत्मीय सुख, अलौकिक आनंद और विशेष उपलब्धि में परिणित हुआ आनंद उत्सव

इस वर्ष के आनंद उत्सव का आयोजन इंदौर जिले के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण था । 2-3 हजार की संख्या में प्रतिदिन कोविड संक्रमित व्यक्तियों को निकालना, ऐसे में कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए आयोजन कैसे करना, आयोजनों को लेकर किसी प्रकार की नकारात्मक प्रतिक्रिया ना हो उसका ध्यान रखना ? निश्चित ही कार्य चुनौतीपूर्ण था । नगर निगम का आयोजन के विषय में सोचना भी लाजमी था कि एक तरफ तो हम लोगों को मास्क न लगाने सोशल डिस्टेंसिंग पालन न करने भीड़ एकत्र करने पर चालानी कार्रवाई कर रहे हैं और दूसरी और इस तरह की सामूहिक गतिविधियों से हमारी कथनी और करनी में विरोधाभास उत्पन्न होने की संभावना है । परंतु कहते हैं "जहां चाह वहां राह स्वतः मिलती है" मैं विजय मेवाड़ा जिला संपर्क व्यक्ति राज्य आनंद संस्थान, निगम अधिकारी और मेरे साथी हम सभी ने इसे एक चैलेंज के रूप में स्वीकार करते हुए रणनीति बनाई जिसमें मुख्य रुप से आनंद उत्सव आयोजन के वास्तविक उद्देश्य, शासन की मंशा, आनंद विभाग की अपेक्षा तीनो बिंदुओं पर हम लोगों ने चिंतन किया । उत्सव आयोजन और कोविड की भयावह स्थिति, सोशल डिस्टेंसिंग फॉलो करने के चुनौती, सीमित प्रतिभागियों की संख्या के साथ आनंद उत्सव कैसे मनाया जाए इस पर भी मंथन किया और विशेषकर आयोजन में सहभागिता हेतु ऐसे लोगों को चिन्हित किया जिन्हें समाज अपने से अलग समझता है और वे अपने को समाज से अलग-थलग समझते है जैसे अभावग्रस्त गरीब बच्चे, मानसिक एवं शारीरिक दिव्यांग बच्चे, परिवार से दूर अकेले रह रहे बुजुर्ग, भिक्षावृत्ति करने वाले भिक्षुक जो समाज से अपने को अलग समझते हैं और समाज भी इन्हें अलग-थलग रखता है । इस कार्य योजना के बाद जो कार्य परिणित हुआ जो मेरा अनुभव रहा जिसमे, उम्मीद भरी, डरती सहमी, झिझकती आँखों मे खुशी आनंद और आत्मविश्वास का बीजारोपण करने का माध्यम मैं बना मुझे लगा, इससे अच्छा और कुछ हो ही नहीं सकता । इन 15 दिनों को मेरे जीवन के सबसे सुखद दिन कहूँ तो अतिशयोक्ति नही होगी । वास्तव में आनंद उत्सव का स्वरूप ऐसा ही होना चाहिए । जो इस प्रकार थे-

1. दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष आयोजन :- युगपुरुष धाम पंचकुइयां रोड पर मानसिक एवं शारीरिक दिव्यांग बच्चों हेतु संस्कृतिक कार्यक्रम नृत्य, गायन वादन, चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । ताकि वे शारीरिक अक्षमता से परे उर्जा और आनंद को अनुभव करें ।
2. अभावग्रस्त बच्चों के लिए आनंद उत्सव का आयोजन :- गरीब के बच्चे जो सड़कों पर अपने परिजनों के साथ गुब्बारे खिलौने बेचकर दैनिक पेट भरने का संघर्ष करते हैं, जवाबदारियों के बोझ से बचपन भूल बड़े बने, इन बच्चों के लिए आनंद उत्सव। जिन्होंने ने सपने में भी नहीं सोचा था कि उन्हें ऐसा सम्मान मंच और नाचने गाने की व्यवस्थाएं कभी मिलेंगी ।
3. समाज से उपेक्षित भिक्षुकों के लिए आनंद उत्सव का आयोजन :- भिक्षुक मुक्त इंदौर के तर्ज पर भिक्षावृत्ति करने वाले शिक्षकों का नगर निगम द्वारा पुनर्वास कराया जा रहा है । उसी पुनर्वास केंद्र पर समाज द्वारा उपेक्षित भिक्षुको जिन्हें लोगों ने केवल धुत्कारा, भगाया है, सामाजिक लोगों का इनके साथ मिलकर खेलना उनकी कल्पना से परे था डरे से हमें मन से खेल रहे इन लोगों का जब संभ्रांत लोगों ने उत्साह वर्धन किया तालियां बजाई, तो डरे सहमे चेहरों पर अलौकिक अद्भुत चमक प्रतिबिंबित हुई।इनके प्रति सामाजिक सोच को बदलने का प्रयास आनंद उत्सव के माध्यम से किया गया ताकि समाज में उन्हें भी महत्व मिले, और वे समाज से मिले साथ व सम्मान से भिक्षावृत्ति जैसे कार्य ना करने हेतु स्वतः प्रेरित हों ।

4. परिवार से दूर अकेले रह रहे वयोवृद्ध वरिष्ठ नागरिकों हेतु आनंद उत्सव:-परिवार से दूर रह रहे वरिष्ठ नागरिकों एवं कॉलोनी मोहल्ले के लोगों के सामूहिक खेल आयोजन किया शहरों में जहां पड़ोसी पड़ोसी को नही पहचानता ऐसे में बुजुर्गों को पारस्परिक पहचान और मैत्री की भावना विकसित करना बुजुर्गों से लोगों का जुड़ाव हो, ताकि सुख दुख में पूरा मोहल्ला कॉलोनी एक दूसरे का साथ दे सके । वरिष्ठ नागरिक जिनमे से ज्यादातर के बच्चे बाहर सेटल है, यह सुख संपन्नता के बावजूद परिवार से दूर रहते हैं उनके अकेलेपन को दूर करने के लिए आनंद उत्सव ।
5. बच्चों महिलाओं युवाओं के लिए विशेष आयोजन मेघदूत उपवन महिलाओ बच्चों युवाओं के लिए आनंद उत्सव का विशेष आयोजन मेघदूत उपवन मैं खुले मैदान मैं शारीरिक दूरी एवं कोविड प्रोटोकॉल का पालन के साथ संपन्न हुए ।
6. ग्रामीण क्षेत्रों में सभी आयु वर्ग मैं ग्रामीणों बुजुर्गों महिलाओं युवाओं और बच्चों के लिए पंचायतों के 104 क्लस्टरों एवम 17 नगरीय क्षेत्रों कुल 121 स्थानों पर विशेष परंपरागत खेलों का आयोजन ।